चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य भभुआ में आयोजित समारोह में महामहिम राज्यपाल,
श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन
(दिनांक–04.10.2016, समय–12:30 बजे दिन)

राष्ट्रपति महात्मा गाँधी के 'चम्पारण सत्याग्रह आंदोलन' के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय सारस्वत परिषद् द्वारा आयोजित 'स्व॰ जवाहर तिवारी स्मृति राष्ट्रीय व्याख्यानमाला समारोह' में प्रमुख रूप से उपस्थित राष्ट्रवादी चिन्तक श्री स्वान्त रंजन जी, सारस्वत परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री एस॰के॰ अग्रवाल जी, परिषद् के मार्ग–दर्शक मंडल के अध्यक्ष डॉ॰ मृत्युंजय उपाध्याय जी, कार्यक्रम के संयोजक श्री विवेकानन्द तिवारी जी, कार्यक्रम में उपस्थित बुद्धिजीवीगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

कैमूर की धरती पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'चम्पारण सत्याग्रह' के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। माँ मुंडेश्वरी की कृपा कैमूरवासियों पर सदैव रही है और इसका परिणाम रहा है कि यहाँ के निवासी अपने संकल्पों को लेकर संवेदनशील और दृढ़व्रती रहे हैं। सरलता, सहजता और भावसम्पन्नता यहाँ के निवासियों की विशेषता रही है।

आज के समारोह में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के 'चम्पारण आंदोलन' के शताब्दी– वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी अत्यन्त सार्थक और प्रासंगिक है। गाँधी जी का 'सत्य और अहिंसा' का संदेश वर्तमान समय में और अधिक समीचीन हो गया है। भौतिकतावाद और अर्थप्रधान संस्कृति के दौर में गाँधी–दर्शन आज इस बात की प्रेरणा देता है कि भौतिक विकास के साथ–साथ मनुष्य का

आध्यात्मिक विकास भी अत्यन्त आवश्यक है। औद्योगिक विकास के दौर में छोटे–छोटे लघु और कुटीर उद्योगों की महत्ता आज भी बनी हुई है। गाँधी का जीवन और उनके संदेश हमें आज भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने और स्वदेशी की भावना के अधिक–से–अधिक प्रसार की प्रेरणा देते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन और सिद्धांत में पूरी एकरूपता है। गाँधीजी कहा भी करते थे कि 'मेरा जीवन ही मेरे सिद्धांत हैं।'

गाँधीजी का 'चम्पारण–आंदोलन' भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन में 'गाँधी युग' की शुरूआत है। बिहार में चम्पारण जिले को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि दक्षिण अफ्रीका से वापस आकर महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम 'सत्याग्रह–आंदोलन' वहीं प्रारंभ किया और उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई।

मोहनदास करमचंद गाँधी द्वारा 1917 में संचालित 'चंपारण सत्याग्रह', न सिर्फ भारतीय इतिहास, बल्कि विश्व इतिहास की एक ऐसी घटना है, जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को खुली चुनौती दी थी। वे 10 अप्रैल, 1917 को जब बिहार आए, तो उनका एक मात्र मकसद चंपारण के किसानों की समस्याओं को समझना, उसका निदान करना और नील के धब्बों को मिटाना था। एक स्थानीय पीड़ित किसान राजकुमार शुक्ल ने कांग्रेस के 'लखनऊ अधिवेशन' में अंग्रेजों द्वारा जबरन नील की खेती कराये जाने के संदर्भ में गाँधीजी से शिकायत की थी। शुक्ल जी का आग्रह था कि गांधीजी इस आंदोलन का नेतृत्व करें। गांधीजी ने इस समस्या को न सिर्फ गंभीरतापूर्वक समझा, बल्कि इस दिशा में आगे भी बढ़े।

निलहों के विरूद्ध राजकुमार शुक्ल सन् 1914 से ही आंदोलन चला रहे थे, लेकिन 1917 में गाँधीजी के सशक्त हस्तक्षेप ने इसे व्यापक जन–आंदोलन बनाया। आंदोलन की अनूठी प्रवृत्ति के कारण

इसे राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने में गांधीजी सफल रहे। गाँधीजी के संगठित नेतृत्व ने चंपारण के किसानों के भीतर जबर्दस्त आत्मविश्वास और सफलता का संचार किया। ब्रिटिश सरकार ने गाँधी की इस पहल को विफल बनाने के लिए धारा–144 के तहत सार्वजनिक शांति भंग करने का नोटिस भी भेजा। लेकिन, गाँधीजी इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए। गाँधीजी के शांतिपूर्ण प्रयास को अनुचित ढंग से दमित करना ब्रिटिश सरकार के लिए भी कठिन सिद्ध हो रहा था। उधर, गाँधीजी की लोकप्रियता निरंतर बढ़ती चली जा रही थी। तत्कालीन समाचार–पत्र भी चंपारण में गाँधीजी की सफलता को काफी प्रमुखता से प्रकाशित कर रहे थे। आन्दोलन की उग्रता को देखते हुए अंग्रेज सरकार झुकने लगी। बिहार के तत्कालीन डिप्टी गर्वनर एडवर्ड गेट ने गाँधीजी को वार्त्ता के लिए बुलाया। किसानों की समस्याओं की जांच के लिए 'चम्पारण एग्रेरियन कमेटी' बनाई गई। सरकार ने गाँधीजी को भी इस समिति का सदस्य बनाया। इस समिति की अनुशंसाओं के आधार पर, 'तीनकठिया' व्यवस्था की समाप्ति कर दी गई। किसानों के लगान में कमी लाई गई और उन्हें क्षतिपूर्ति राशि भी मिली। पहली बार, शांतिपूर्ण जन–विरोध के माध्यम से सरकार को कतिपय मांगों को मानने के लिए सहमत कर लेना एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। 'सत्याग्रह' का भारत के राष्ट्रीय स्तर पर यह पहला प्रयोग इस लिहाज से काफी सफल रहा।

इस आंदोलन का दूरगामी लाभ यह हुआ कि इस क्षेत्र में विकास की प्रारंभिक पहल हुई, जिसके तहत कई पाठशाला, चिकित्सालय, खादी संस्थान और आश्रम स्थापित किए गये। गाँधीजी जानते थे कि 'स्वतंत्रता–आन्दोलन' को मजबूती प्रदान करने के लिए शिक्षा का प्रसार बेहद जरूरी है, इसलिए उन्होंने चम्पारण क्षेत्र में कई शैक्षणिक संस्थाएँ खुलवायीं।

'चम्पारण आन्दोलन' भारत के स्वतंत्रता– संग्राम का एक अद्वितीय अध्याय रहा है। इतिहासकार इसे जंगे–आजादी के इतिहास में 'मील का पत्थर' बताते हैं। गाँधीजी के अन्य सभी आंदोलनों यथा– सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन, भारत छाड़ो आंदोलन आदि की पुख्ता नींव चम्पारण के 'सत्याग्रह आंदोलन' के समय ही पड़ी।

अपनी 'आत्मकथा' में गाँधीजी ने लिखा है कि–''यह अक्षरशः सत्य है कि मैंने चम्पारण में ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया। जब मैं इस साक्षात्कार के अपने अधिकार की जाँच करता हूँ तो मुझे वहाँ के लोगों के प्रति अपने प्रेम के सिवा कुछ भी नही मिलता। चम्पारण के वे दिन मेरे जीवन में कभी न भूलने जैसे हैं। मेरे लिए और किसानों के लिए ये उत्सव के दिन थे।'' बाद में, गाँधीजी ने मीरा बेन को सन् 1927 में लिखे अपने एक पत्र में भी स्वीकार किया कि–"Champaran has sacred memories for me. Champaran really introduced me to India." गाँधीजी के इन शब्दों से 'चम्पारण–आन्दोलन' की महत्ता स्वतः प्रतिपादित हो जाती है। वस्तुतः गाँधीजी ने सत्य, प्रेम और अहिंसा के पथ पर चलकर स्वतंत्रता– प्राप्ति का जो आंदोलन छेड़ा, 'चम्पारण आंदोलन' उसी की शुरूआत था। इस आंदोलन के बारे में भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी, अपनी एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक–'चम्पारण में महात्मा गाँधी' में लिखते हैं कि ''चम्पारण के इतिहास में ही नही, वरन् भारतवर्ष के इतिहास में चम्पारण–आंदोलन का बड़ा महत्व है। चम्पारण की प्रजा के दुःखों को दूर करने के लिए पूर्णतः कटिबद्ध, साथ ही दुःख देनेवालों को भी तनिक भी हानि नहीं पहुँचाने की इच्छा रखने वाले महात्मा गाँधी की पवित्र आत्मा मानों धरती पर इसी पुण्य कार्य के लिए अवतरित हुई थी।''

वस्तुतः, 'चम्पारण आंदोलन' ने भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन में 'गाँधी युग' का सूत्रपात किया, जिसके बल–बूते हमें 1947 में स्वतंत्रता मिली। इस आंदोलन के दौरान गाँधीजी को बिहार से, और बिहार के बाहर से भी, ऐसे निष्ठावान सहयोगी मिले, जिन्होंने अपनी सक्रियता से भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन को काफी मजबूती प्रदान की। 'चम्पारण–आंदोलन', दरअसल वह प्रथम अहिंसात्मक आंदोलन था, जो अपने लक्ष्य में सफल भी रहा और गाँधीजी तथा उनके अनुयायियों में यह विश्वास पैदा करने में भी कामयाब रहा कि सत्य और अहिंसा के बल पर ही भारत के लिए आजादी हासिल की जा सकती है। इस आंदोलन के बाद से ही गाँधीजी के प्रति आम भारतीय जन–मानस का झुकाव बढ़ गया और भारतीय जनता उन्हें पूरी श्रद्धा और विश्वास से देखने–पूजने लगी। इस प्रकार आज जब हम 'चम्पारण आंदोलन' का शताब्दी–वर्ष आयोजित कर रहे हैं, तो हमें इस आंदोलन के पीछे के सैद्धांतिक तत्वों की प्रासंगिकता भी समझनी चाहिए। आज भी सत्य, अहिंसा और प्रेम भारतीय समाज, देश व राजनीति के लिए अत्यन्त प्रेरणादायी बने हुए हैं। भौतिकतावाद और वैज्ञानिक विकास के दौर में भी सत्य पर आधारित आचरण हमारा परम दायित्व है। समाज में शांति, समता और समरसता के लिए अहिंसा और प्रेम के संदेश हमारे लिए अत्यन्त अनुकरणीय हैं।

मित्रों, आज जरूरी है कि हम अपनी 'नई आर्थिक नीति' के निर्धारण के क्रम में इस बात का ध्यान रखें कि सामाजिक विषमता की खाई और अधिक नहीं बढ़े। इस खाई को पाटा जाना बेहद जरूरी है। कृषि पर आधारित अपनी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण की प्रेरणा हमें 'चम्पारण आंदोलन' से मिलती है। समाज और राजनीति में सामूहिक नेतृत्व और सामूहिक प्रयासों का कितना सार्थक नतीजा सामने आता है–यह आज समझने की जरूरत है। समाज के कमजोर तबके

और अभिवंचित वर्ग को सामाजिक नेतृत्व एवं शक्ति प्रदान किये बिना देश का समग्र विकास संभव नहीं दिखता। वंशवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद जैसी विकृतियों से यथाशीघ्र मुक्ति की प्रेरणा भी हमें चम्पारण के जन–आंदोलन से मिलती है।

आइये, हम सभी 'चम्पारण सत्याग्रह' के शताब्दी–वर्ष के आयोजन के क्रम में इस बात के लिए दृढ़संकल्पित हों कि हम एक सम्पन्न और सशक्त भारतवर्ष के स्वर्णिम भविष्य के लिए अपने सामूहिक प्रयास और तेज करेंगे तथा भारतीय संविधान और कानून की सर्वोच्चता और मर्यादा की रक्षा हर कीमत पर करेंगे। हम एक ऐसे खुशहाल और शांतिपूर्ण भारतवर्ष का नवनिर्माण करेंगे, जहाँ सबको विकास के समान अवसर उपलब्ध होंगे।

मैं आज के समारोह में विभिन्न प्रक्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित हुए सभी प्रतिभावान व्यक्तियों को अपनी बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। एक सार्थक वैचारिक आयोजन के लिए मैं कार्यक्रम–आयोजकों को भी बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!

.....

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।